

राजगढ़ तहसील में फ़सल उत्पादन का भौगोलिक अध्ययन

Mahesh Chand Meena*

Associate Professor, Department of Geography, B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध सारांश - मनुष्यो की मूलभूत आवश्यक आवश्यकता रोटी, कपड़ा और मकान है। जिसके बिना मनुष्य का जीवन अधूरा एवं असंभव सा है। मनुष्य की इस सभी मूलभूत आवश्यक आवश्यकता की पूर्ति केवल कृषि (Agriculture) के द्वारा ही संभव है। अतः कृषि ही मनुष्य को खाने के लिए रोटी, शरीर को ढकने के लिए कपड़ा व रहने के लिए मकान आदि का व्यवस्था करती है। कृषि के अंतर्गत पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं तथा वनस्पतियों का पालन-पोषण होता है। इसके माध्यम से प्राकृतिक में जैविक संतुलन बनाए रखने में सहायता मिलती है। कृषि से मानव संस्कृत हेतु कपड़ा, मकान, औषधि तथा मनोरंजन के साधन भी विकसित होते हैं इस प्रकार कृषि मानव जीवन का मुख्य आधार है। पहले कृषि का अर्थ सिर्फ फसल उत्पादन से ही लगाया जाता था। लेकिन बदलते दौर ने कृषि को भी बदल लिया है तथा समय-समय पर इसमें बहुत से व्यवसाय जुड़ते चले गए तथा इसके भाग बनते चले गए। चुकी हम सूचना क्रांति के युग में जी रहे हैं। इस शोध पत्र में राजगढ़ तहसील में विभिन्न फ़सलों के उत्पादन का भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द – कृषि का अर्थ, राजगढ़ का क्षेत्रीय परिदृश्य, राजगढ़ तहसील में फ़सल उत्पादन, राजगढ़ तहसील में कृषि उत्पादकता में वृद्धि के उपाय एवं निष्कर्ष

-----X-----

कृषि का अर्थ

Agriculture शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के दो शब्दों AGRIC+CULTURA से हुई है। जिसमें AGRIC का शाब्दिक अर्थ है “मृदा या भूमि” जबकि CULTURA का शाब्दिक अर्थ है “कर्षण करना” अर्थात् “मृदा का कर्षण करना” ही कृषि (Agriculture) अथवा खेती कहलाता है।

Agriculture = Agric (मृदा) + Cultura (कर्षण)

कृषि एक बहुत ही व्यापक शब्द है जिसमें फसल उत्पादन, पशुपालन, मछली पालन व वानिकी आदि सभी पहलुओं को सम्मिलित किया जाता है। कृषि को एक कला, एक विज्ञान एवं एक वाणिज्य भी कहा जाता है क्योंकि कृषि इन सभी का एक योग है।

राजगढ़ तहसील

राजगढ़ तहसील को वर्तमान शोध समस्या के अध्ययन के लिए चुना गया है। यह अलवर जिले के दक्षिण में स्थित है। राजगढ़ जिला मुख्यालय अलवर से दक्षिण की तरफ 36 किमी० की दूरी

पर स्थित है। यह 27 डिग्री 4 मिनट उत्तरी अक्षांश से 27 डिग्री 21 मिनट उत्तरी अक्षांश तथा 76 डिग्री 17 मिनट पूर्वी देशान्तर से 76 डिग्री 52 मिनट पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। राजगढ़ की समुद्रतल से ऊँचाई 479 मीटर है। इस क्षेत्र में भूमि का सामान्य ढलान पश्चिम की ओर है। राजगढ़ के उत्तर, पूर्व व दक्षिण की तरफ पहाड़ हैं। राजगढ़ तहसील अरावली पहाड़ियों के मध्य बसा हुआ है।



शोध उद्देश्य

1. राजगढ़ तहसील में फ़सल उत्पादन का अध्ययन किया गया है।

2. राजगढ़ तहसील में फ़सलों के उत्पादन का मौसम से सम्बंध बताया गया है।
3. राजगढ़ तहसील में कृषि उत्पादकता में वृद्धि के उपाय सुझाए गए हैं।

शोध परिकल्पना

1. राजगढ़ तहसील में फ़सल प्रतिरूप में परिवर्तन हो रहा है।
2. राजगढ़ तहसील में कुछ फ़सलों के उत्पादन में निरन्तर वृद्धि भी हो रही है।

आँकड़ों का संग्रह एवं विधितन्त्र

अध्ययन क्षेत्र का सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए प्राथमिक आँकड़े एकत्रित किये गये हैं जो प्रत्येक तहसील से लिए गये हैं। यह सम्पूर्ण कार्य प्रश्नावलियों से एवं आनुभाविक है। ये क्षेत्रीय सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक आँकड़े, सरकारी आँकड़ों से तुलना करने में उपयोगी होंगे। राजगढ़ तहसील से कृषि सम्बन्धित आँकड़ों से लिये गये हैं जो हमने प्रकाशित व अप्रकाशित स्रोतों से प्राप्त किये हैं। यह अध्ययन प्राथमिक व द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है-

(अ) प्राथमिक आँकड़ों के प्राप्ति स्रोत

- I. प्रश्नावली तैयार की गई है।
- II. अनुसूचियों के माध्यम से किया गया है।
- III. प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा किया गया है।
- IV. संवाददाताओं व पत्र पत्रिकाओं से आँकड़ों का एकत्रीकरण किया गया है।

(ब) द्वितीयक आँकड़ों के प्राप्ति स्रोत

- I. उपनिदेशक कृषि विभाग, अलवर (राज.)
- II. सिंचाई विभाग, राजगढ़, अलवर (राज.)
- III. सूचना एवं जन सम्पर्क कार्यालय, अलवर

क्षेत्रीय परिदृश्य

राजगढ़ अरावली पहाड़ियों के मध्य स्थित है, जिसका सामान्य ढलान पश्चिम की तरफ है, शेष राजगढ़ के आसपास का क्षेत्र समतल है। राजगढ़ अपने पृष्ठ क्षेत्र से सड़क व रेल मार्ग से भली-भाँति जुड़ा होने के कारण यह अलवर जिले का महत्वपूर्ण कस्बा है। राज्य राजमार्ग संख्या-25 अलवर-बाँदीकुई-सिकन्दरा मेगा हाईवे तथा राज्य राज मार्ग संख्या 25-ए, टहला-राजगढ़-महवा कस्बे से होकर गुजरते हैं। जयपुर-सिकन्दरा-आगरा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11 राजगढ़ के दक्षिण की तरफ करीब 40 कि.मी. की दूरी पर है। इस प्रकार राजगढ़ जिला मुख्यालय अलवर, बाँदीकुई, भरतपुर, जयपुर, आगरा व आसपास के क्षेत्र तथा राज्य एवं समीपवर्ती राज्यों के प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है जिसके फलस्वरूप क्षेत्रीय स्तर पर इसका अपना एक विषिष्ट स्थान है। वर्तमान में यह मार्बल पत्थर कटिंग व पॉलिशिंग, स्टोन, मार्बल चिप्स आदि खनन आधारित उद्योग, कृषि उत्पाद व शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी है। दिल्ली-अलवर-जयपुर ब्रॉडगेज रेलवे लाईन शहर में से गुजरती है जिस कारण यह रेल मार्ग द्वारा आसपास के क्षेत्र, राज्य व देश के अन्य प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। राजगढ़ से करीब 25 कि.मी. की दूरी पर टहला का मार्बल पत्थर का प्रमुख खनन क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त राजगढ़ के पृष्ठ क्षेत्र की कृषि भूमि उपजाऊ है जिसमें सरसों व गेहूँ की फसल प्रमुख है जो राज्य के अन्य जिलों व देश के अन्य भागों को भेजी जाती है। अतः इस प्रकार राजगढ़ आस पास के ग्रामीण क्षेत्र हेतु एक उप क्षेत्रीय सेवा केन्द्र के रूप में विकसित है।

राजगढ़ तहसील में फ़सल उत्पादन

तालिका संख्या 1 में राजगढ़ तहसील में गत पाँच वर्षों का कृषि उत्पादन प्रदर्शित किया गया है। तालिका में विभिन्न फ़सलों के पंच वर्षीय विश्लेषण निम्न प्रकार है।

बाजरा

बाजरा की फसल के प्रति हेक्टेयर उत्पादन में गत पांच वर्षों में निरन्तर वृद्धि दर्ज की गई। वर्ष 2014-15 में बाजरा का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 1322 किलोग्राम था जो वर्ष 2015-16 में बढ़कर 1395 किलोग्राम हो गया इसी प्रकार वर्ष 2016-17 में बढ़कर 1467 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया। वर्ष 2017-18 बाजरा का प्रति हेक्टेयर उत्पादन बढ़कर 1556 किलोग्राम हो गया जो गत वर्ष की तुलना में 89 किलोग्राम अधिक था इसी प्रकार वर्ष 2018-19 में वर्षा की औसत मात्रा

में वृद्धि, सिंचाई सुविधाओं का विकास एवं मौसम की अनुकूलता के कारण उत्पादन बढ़कर 1780 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया यह वृद्धि गत वर्ष की तुलना में 224 किलोग्राम अधिक थी।

मक्का

मक्का की फसल में भी निरन्तर वृद्धि दर्ज की गई वर्ष 2014-15 में मक्का का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 1345 किलोग्राम था जो वर्ष 2015-16 में बढ़कर 1453 किलोग्राम हो गया इसी प्रकार वर्ष 2016-17 में बढ़कर 1529 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया। वर्ष 2017-18 रबी दाल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन बढ़कर 1645 किलोग्राम हो गया जो गत वर्ष की तुलना में 116 किलोग्राम अधिक था इसी प्रकार वर्ष 2018-19 में वर्षा की औसत मात्रा में वृद्धि, सिंचाई सुविधाओं का विकास एवं मौसम की अनुकूलता के कारण उत्पादन बढ़कर 1895 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया यह वृद्धि गत वर्ष की तुलना में 250 किलोग्राम अधिक थी।

तालिका संख्या :- 1

राजगढ़ तहसील में विभिन्न फसलों का उत्पादन (2014 - 2019)

क्रम संख्या	विभिन्न फसलें	राजगढ़ तहसील में विभिन्न फसलों का उत्पादन (2014 -19) किलोग्राम प्रति हेक्टेयर				
		2014-15	2015-16	2016-17	2017-18	2018-19
01	बाजरा	1322	1395	1467	1556	1780
02	मक्का	1345	1453	1529	1645	1895
03	ज्वार	635	696	813	745	790
04	गेंहूँ	3576	3623	3815	3755	3802
05	जौ	2317	2386	2519	2445	2488
06	धान	1148	1046	1123	1115	1185
07	लिन	316	298	345	267	315
08	छत्तों	1115	1098	965	1225	1305
09	कमरुआ	417	527	588	398	658
10	दाते खरीक	287	310	201	147	189
11	दाने रबी	998	1088	1108	1198	1326

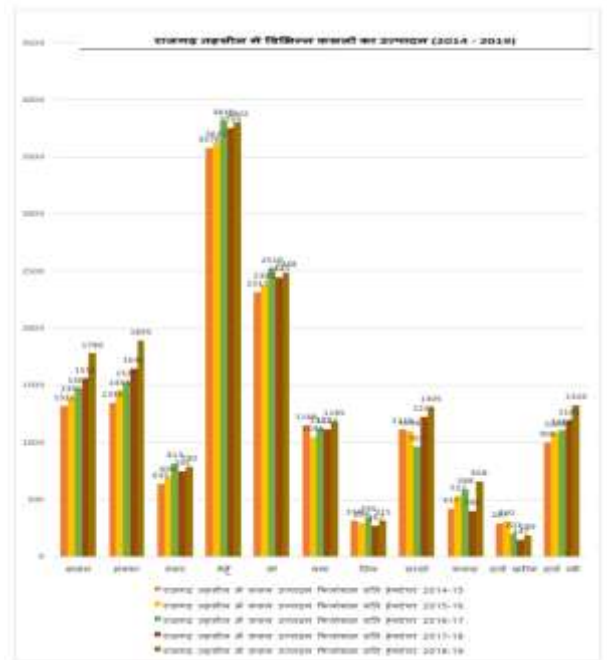
स्रोत :- कार्यालय उप निदेशक कृषि विभाग, अलवर

ज्वार

ज्वार की फसल में प्रति हेक्टेयर उत्पादन वृद्धि दर में परिवर्तन देखा गया। वर्ष 2014-15 में ज्वार की फसल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 635 किलोग्राम था जो वर्ष 2015-16 में ज्वार का प्रति हेक्टेयर उत्पादन बढ़कर 696 किलोग्राम हो गया। वर्ष 2016-17 में बढ़कर 813 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया लेकिन 2017-18 में वर्षा की कमी एवं मौसम के प्रभाव के कारण ज्वार का उत्पादन गत वर्ष की तुलना में घटकर 745 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया जबकि वर्ष 2018-19 में ज्वार उत्पादन में वृद्धि हुई जो बढ़कर 790 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया जो कि वर्ष 2016-17 की तुलना में 23 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर कम था।

गेंहूँ

राजगढ़ तहसील में गेंहूँ की फसल में प्रति हेक्टेयर उत्पादन में परिवर्तित स्वरूप परिलक्षित हो रहा है। वर्ष 2014-15 में गेंहूँ का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 3576 किलोग्राम था जो वर्ष 2015-16 में बढ़कर 3623 किलोग्राम हो गया इसी प्रकार वर्ष 2016-17 में बढ़कर 3815 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया। वर्ष 2017 -18 गेंहूँ का प्रति हेक्टेयर उत्पादन घटकर 3755 किलोग्राम रह गया जो गत वर्ष की तुलना में 60 किलोग्राम कम था लेकिन वर्ष 2018-19 में वर्षा की औसत मात्रा में वृद्धि एवं मौसम की अनुकूलता के कारण उत्पादन बढ़कर 3802 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया यह वृद्धि गत वर्ष की तुलना में 47 किलोग्राम अधिक थी।



जौ

राजगढ़ तहसील में जौ की फसल में प्रति हेक्टेयर उत्पादन में परिवर्तित स्वरूप परिलक्षित हो रहा है। वर्ष 2014-15 में जौ का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 2317 किलोग्राम था जो वर्ष 2015-16 में बढ़कर 2386 किलोग्राम रह गया इसी प्रकार वर्ष 2016-17 में बढ़कर 2519 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया। वर्ष 2017-18 जौ का प्रति हेक्टेयर उत्पादन घटकर 2445 किलोग्राम रह गया जो गत वर्ष की तुलना में 74 किलोग्राम कम था लेकिन वर्ष 2018-19 में वर्षा की औसत मात्रा में वृद्धि एवं मौसम की अनुकूलता के कारण उत्पादन पुनः बढ़कर 2488 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया यह वृद्धि गत वर्ष की तुलना में 43 किलोग्राम अधिक थी।

चना

राजगढ़ तहसील में चना की फसल में प्रति हेक्टेयर उत्पादन में परिवर्तित स्वरूप परिलक्षित हो रहा है। वर्ष 2014-15 में चना का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 1148 किलोग्राम था जो वर्ष 2015-16 में घटकर 1046 किलोग्राम हो गया इसी प्रकार वर्ष 2016-17 में बढ़कर 1123 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया। वर्ष 2017-18 चना का प्रति हेक्टेयर उत्पादन घटकर 1115 किलोग्राम रह गया जो गत वर्ष की तुलना में केवल 08 किलोग्राम कम था लेकिन वर्ष 2018-19 में वर्षा की औसत मात्रा में वृद्धि एवं मौसम की अनुकूलता के कारण उत्पादन बढ़कर 1185 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया यह वृद्धि गत वर्ष की तुलना में 70 किलोग्राम अधिक थी।

तिल

राजगढ़ तहसील में तिल की फसल में प्रति हेक्टेयर उत्पादन में परिवर्तित स्वरूप परिलक्षित हो रहा है। वर्ष 2014-15 में तिल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 316 किलोग्राम था जो वर्ष 2015-16 में घटकर 298 किलोग्राम रह गया इसी प्रकार वर्ष 2016-17 में पुनः बढ़कर 345 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया। वर्ष 2017-18 तिल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन घटकर 267 किलोग्राम रह गया जो गत वर्ष की तुलना में 78 किलोग्राम कम था लेकिन वर्ष 2018-19 में वर्षा की औसत मात्रा में वृद्धि एवं मौसम की अनुकूलता के कारण उत्पादन बढ़कर 315 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया यह वृद्धि गत वर्ष की तुलना में 48 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर अधिक थी।

सरसों

राजगढ़ तहसील में सरसों की फसल में प्रति हेक्टेयर उत्पादन में परिवर्तित स्वरूप परिलक्षित हो रहा है। वर्ष 2014-15 में सरसों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 1115 किलोग्राम था जो वर्ष 2015-16 में घटकर 1098 किलोग्राम रह गया इसी प्रकार वर्ष 2016-17 में पुनः घटकर 965 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर ही रह गया। वर्ष 2017-18 सरसों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन में वृद्धि दर्ज की गई। अध्ययन क्षेत्र राजगढ़ तहसील में सिंचाई सुविधाओं का विकास होने से सरसों का प्रति हेक्टेयर उत्पादन पुनः बढ़कर 1225 किलोग्राम हो गया जो गत वर्ष की तुलना में 260 किलोग्राम अधिक था लेकिन वर्ष 2018-19 में वर्षा की औसत मात्रा में वृद्धि एवं मौसम की अनुकूलता के कारण उत्पादन बढ़कर 1305 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया यह वृद्धि गत वर्ष की तुलना में 80 किलोग्राम अधिक थी।

कपास

राजगढ़ तहसील में कपास की फसल में प्रति हेक्टेयर उत्पादन में परिवर्तित स्वरूप परिलक्षित हो रहा है। वर्ष 2014-15 में कपास का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 417 किलोग्राम था जो वर्ष 2015-16 में बढ़कर 527 किलोग्राम हो गया इसी प्रकार वर्ष 2016-17 में बढ़कर 588 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया। वर्ष 2017-18 कपास का प्रति हेक्टेयर उत्पादन घटकर 398 किलोग्राम रह गया जो गत वर्ष की तुलना में 190 किलोग्राम कम था लेकिन वर्ष 2018-19 में वर्षा की औसत मात्रा में वृद्धि एवं मौसम की अनुकूलता के कारण कपास का उत्पादन पुनः बढ़कर 658 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया यह वृद्धि गत वर्ष की तुलना में 260 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर अधिक थी।

दालें खरीफ

राजगढ़ तहसील में खरीफ दाल की फसल में प्रति हेक्टेयर उत्पादन में भी परिवर्तित स्वरूप परिलक्षित हो रहा है। वर्ष 2014-15 में खरीफ दाल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 287 किलोग्राम था जो वर्ष 2015-16 में बढ़कर 310 किलोग्राम हो गया इसी प्रकार वर्ष 2016-17 में घटकर 201 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर ही रह गया। वर्ष 2017-18 खरीफ दाल का प्रति हेक्टेयर पुनः उत्पादन घटकर 147 किलोग्राम रह गया जो गत वर्ष की तुलना में 54 किलोग्राम कम था लेकिन वर्ष 2018-19 में वर्षा की औसत मात्रा में वृद्धि एवं मौसम की अनुकूलता के कारण उत्पादन बढ़कर 189 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया यह वृद्धि गत वर्ष की तुलना में 42 किलोग्राम अधिक थी।

दालें रबी

राजगढ़ तहसील में रबी दाल की फसल में प्रति हेक्टेयर उत्पादन में निरन्तर वृद्धि हो रहा है। वर्ष 2014-15 में रबी दाल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन 998 किलोग्राम था जो वर्ष 2015-16 में बढ़कर 1088 किलोग्राम हो गया इसी प्रकार वर्ष 2016-17 में बढ़कर 1108 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया। वर्ष 2017-18 रबी दाल का प्रति हेक्टेयर उत्पादन बढ़कर 1188 किलोग्राम हो गया जो गत वर्ष की तुलना में 80 किलोग्राम अधिक था इसी प्रकार वर्ष 2018-19 में वर्षा की औसत मात्रा में वृद्धि, सिंचाई सुविधाओं का विकास एवं मौसम की अनुकूलता के कारण उत्पादन बढ़कर 1326 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो गया यह वृद्धि गत वर्ष की तुलना में 138 किलोग्राम अधिक थी।

राजगढ़ तहसील में कृषि उत्पादकता में वृद्धि के उपाय

आजादी के बाद, राजगढ़ तहसील में कृषि क्षेत्र और अनाज उत्पादन में सुधार के लिए प्रयास किए गए हैं। भारतीय संसद में पेश किए गए आर्थिक सर्वेक्षण 2017-18 के अनुसार कृषि उद्योग 2.1% पर बढ़ने का अनुमान है। सर्वेक्षण में यह भी संकेत दिया गया है कि सरकार 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का इरादा रखती है, जिसके लिए उसने पहले से ही विभिन्न नई पहलों की शुरुआत की है जो काफी कारगर भी साबित हुई हैं।

हरित क्रांति (1960) से लेकर विभिन्न गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों तक, राजगढ़ तहसील में कृषि प्रौद्योगिकी में लगातार विकास कर रहा है। हालांकि, नोहर तहसील के किसानों में से केवल एक तिहाई ने उन्नत प्रौद्योगिकी अपनाई है। शेष कृषि नवाचारों और खेती के आधुनिक तरीकों से अवगत नहीं हैं जो उच्च फसल पैदावार और गुणवत्ता का कारण बन सकते हैं।

यह तहसील एक कृषि प्रधान होने के नाते विकास के उस स्तर तक पहुंच गई है जहां यह 'सदाबहार क्रांति' की मांग करता है, यानी कम प्राकृतिक संसाधन (पानी, जमीन और ऊर्जा) के साथ अधिक उत्पादन करना। इस शोध पत्र में, हम 5 तकनीकों या रणनीतियों के बारे में अध्ययन करेंगे जो नोहर तहसील में कृषि उत्पादकता में सुधार ला सकते हैं।

1. मृदा स्वास्थ्य संवर्धन

मृदा स्वास्थ्य को मिट्टी के भौतिक, जैविक और रासायनिक कार्यों की अनुकूलतम स्थिति के रूप में निर्धारित किया जा सकता है। कुछ स्मार्ट दृष्टिकोण और उन्नत तकनीकों के साथ, मिट्टी की जैविक प्रजनन क्षमता को बनाए रखते हुए इसकी कार्बनिक पदार्थ में सुधार करना आसान है। मृदा स्वास्थ्य वृद्धि तकनीकों का उद्देश्य पौधों की उत्पादकता में सुधार करना और पोषक तत्वों के कृषि संबंधी उपयोग की प्रभावशीलता को बढ़ावा देना है।

आप कृषि मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार के लिए निम्नलिखित दृष्टिकोणों पर विचार कर सकते हैं:

- ▶ मिट्टी की संघनन से बचें
- ▶ टिलेज कम करें
- ▶ कवर फसलों को बढ़ाएं
- ▶ फसल रोटेशन पर ध्यान केंद्रित करें

- ▶ कार्बनिक संशोधन का प्रयोग करें

जब आप रचनात्मक रूप से तकनीकों की उचित संख्या का पालन करते हैं, तो आपकी अधिकांश मिट्टी की स्वास्थ्य समस्याओं को हल किया जा सकता है।

2. सिंचाई जल आपूर्ति बढ़ाना और प्रबंधन:-

राजगढ़ तहसील में, जल वितरण अनिश्चितताओं से भरा हुआ है और स्थानीय समुदायों में पानी झगड़े का कारण बन सकता है। यदि आप सीमित पानी की आपूर्ति वाले रेगिस्तान या शुष्क क्षेत्रों में रहते हैं, तो आप पौधे कैसे विकसित करेंगे?

शुरुआती फसल के विकास के दौरान पानी की कमी से उत्पादन में कमी या पूरे उत्पादन की विफलता हो सकती है। बढ़ते मौसम के दौरान फसल की जरूरतों को पूरा करने के लिए, अतिरिक्त पानी की आपूर्ति कृत्रिम रूप से की जानी चाहिए। सिंचाई जल आपूर्ति संवर्द्धन और वर्षा जल संचयन की स्थापना करके, आप फसल के लिए आवश्यक पानी की मात्रा की आपूर्ति कर सकते हैं। इस तकनीक का प्राथमिक लक्ष्य जल आपूर्ति को नियंत्रित करना और स्मार्टफोन का उपयोग करके पौधों का निरीक्षण करना है। इसके अलावा, बेहतर सिंचाई प्रथाओं जैसे सिंचाई और ड्रिप सिंचाई को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

3. क्रेडिट और बीमा

उधार ब्याज दरों और जमा के बीच का मूल्य राजगढ़ तहसील में अधिक है। लेकिन, क्रेडिट सुधार के साथ छोटे खेतों की उत्पादकता में वृद्धि करना आसान है। विचार लेनदेन और जोखिम लागत को नियंत्रित करते समय वित्तीय वितरण प्रणाली में दक्षता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। यहां, निरंतर सूखे, बाढ़ और भारी कीट उपद्रव के मामले में किसानों को राहत प्रदान करने के लिए सरकार को कुछ महत्वपूर्ण कदम भी उठाने चाहिए।

किसानों को धन उधारदाताओं के प्रभुत्व से बचाने के लिए, पर्याप्त क्रेडिट सुविधाएं, और कृषि-जोखिम कोष ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध कराया जाना चाहिए। केंद्रीय और राज्य सरकारों को बैंकिंग प्रणाली को समर्थन देना होगा जो अंततः फसल ऋण के लिए ब्याज दर को कम करेगा और पौधों की उत्पादकता में सुधार करेगा। इसके अलावा, सहकारी ऋण समितियों और भूमि बंधक बैंकों को किसानों को ऋण प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

4. उन्नत प्रौद्योगिकी:-

किसानों के शोषण की रक्षा के लिए, सरकार द्वारा महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है। हमारे देश में किसान को आर्थिक कीमतों पर गुणवत्ता इनपुट प्रदान किया जाना चाहिए। किसानों को इन 3 उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियों को अपनाना चाहिए।

एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस)

महाराष्ट्र, तेलंगाना और मध्य प्रदेश के एक दर्जन गांवों के किसानों ने फसल पैदावार को बढ़ावा देने के लिए एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) का उपयोग शुरू कर दिया है। मिट्टी के स्वास्थ्य की निगरानी करने और कटाई जैसे अन्य कृषि कार्यों को करने के लिए कृषि रोबोट भी विकसित किए जा रहे हैं। मशीन लर्निंग मॉडल मौसम परिवर्तन जैसे पर्यावरणीय प्रभावों को विश्लेषण और भविष्यवाणी भी कर सकते हैं। इस प्रौद्योगिकी को राजगढ़ तहसील में भी अपनाया जाना चाहिए।

ऑटोपिलॉट ट्रैक्टर

जैसा कि नाम इंगित करता है, यह एक स्वायत्त फार्म वाहन है जो कृषि कार्यों को करने के लिए धीमी गति से उच्च ट्रैक्टिव प्रयास प्रदान करता है। जीपीएस तकनीक के आधार पर, इस प्रकार के ट्रैक्टरों को स्वायत्तता से अपनी स्थिति को ट्रैक करते हैं, गति निर्धारित करते हैं और कई कृषि सम्बंधित कार्य जैसे कि टिलेज करते समय बाधाओं से बचते हैं।

फसल सेंसर

ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) की मदद से आवश्यक मिट्टी के गुणों को मापने के लिए ऐसे सेंसर का उपयोग किया जाता है। फसल सेंसर का उपयोग वास्तविक समय में परिवर्तनीय दर अनुप्रयोग उपकरण को नियंत्रित करने के लिए भी किया जाता है। एक उन्नत कृषि प्रणाली अभिविन्यास को अपनाने के दौरान किसान उत्पादन और बाढ़ में फसल प्रौद्योगिकियों के बीच उचित संतुलन रख सकते हैं।

5. कृषि शिक्षा

राजगढ़ तहसील के किसान नई और उन्नत प्रौद्योगिकी को अपनाने में अच्छे हैं। लेकिन, वे आधुनिक कृषि तकनीकों से अवगत नहीं हैं। नई तकनीक को अपनाने के संबंध में किसानों को मार्गदर्शन करने के लिए, कई शैक्षणिक और जागरूकता कार्यक्रम शुरू किए जाने चाहिए। इन सभी पहलों से किसानों को

उचित फसल-देखभाल करने में सहायता मिलेगी जो आखिरकार फसल उत्पादकता को बढ़ावा देगा।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि राजगढ़ तहसील में मौसम, जलवायु परिवर्तन एवं वर्षा की मात्रा में परिवर्तन से फसल उत्पादन में परिवर्तन आ रहा है। अतः कृषि उत्पादकता में वृद्धि आवश्यक हो गई है। कृषि में उन्नत प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने के लिए, विभिन्न देशों में कई कृषि व्यापार प्रदर्शनी और कृषि मेले आयोजित किए जाते हैं जहां निवेशक और अन्य तकनीकी-आधारित कंपनियां आम जनता को अपने विचार और उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन करती हैं। अतः राजगढ़ तहसील में कृषि उत्पादन में वृद्धि हेतु सरकारी योजनाओं को लागू करना चाहिए ताकि तहसील में कृषि उत्पादन में वृद्धि होने के साथ किसानों को आर्थिक लाभ भी प्राप्त हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान का भूगोल, डॉ एच एस शर्मा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. कृषि की समस्या और समाधान, डॉ. विजय कुमार वर्मा, व्यक्तिगत सम्पर्क
3. कृषि एक शोध कार्यों का अध्ययन, पुस्तकालय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
4. जिला सांख्यिकीय विभाग, अलवर, राजस्थान
5. कृषि भूगोल, बी. एन. सिंह, प्रवालिका पब्लिकेशन, इलाहाबाद
6. उपनिदेशक, कृषि विभाग, अलवर राजस्थान।
7. जिला कलेक्टर कार्यालय, जिला अलवर

Corresponding Author

Mahesh Chand Meena*

Associate Professor, Department of Geography,
B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan